



कुपोषण एक सामाजिक समस्या के रूप में

डॉ. बी. एल. पवार

आसि. प्रोफेसर समाजशास्त्र
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज,
जि. साबरकांठा-३८३४६०
[गुजरात] भारत

(१) प्रस्तावना :

राष्ट्र स्तर पर उभरनेवाली कई सामाजिक समस्याओं में से कुपोषण की समस्या आज चिंता का विषय बन गई हैं। पहले हम इस समस्या की जड़े अकाल ग्रस्त या अन्न की कमी के परिणाम स्वरूप गरीब परिवारों और पोषणक्षम आहारों से अभावग्रस्त समाज के कुछ सीमित वर्गों को ही जवाबदेह मानते थे। हालांकि इन समाजों के लिए यह कोई नयी ताजपेशी नहीं है, इन समाजों के अंदर तो ऐसी कई समस्याएँ अनंतकाल दीवार बनाकर खड़ी हैं। लेकिन वर्तमान परिवेश में इस समस्या की जड़े शायद अन्य समाजों में भी कई तरह फैलती जा रही हैं। जब उनकी मात्रा बढ़ जाती है तो वे सार्वत्रिक समस्या के रूप में उभरकर सामने आती हैं।

वर्तमान द्रुतगति के समयचक्र में इस समस्या का फलक शायद सभी समाजों और वर्गों में विस्तृत होता जा रहा है। जैसे कि समाज के संभ्रात और मध्यम वर्ग जिसके पास खाने-पीने का इंतजाम की सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वे आसानी से यह सिकंजे में शामिल होते जा रहे हैं। वर्तमान समय में मनुष्य का जीवन भागदौड़ या शोध उपकरणों की तरह गतिशील बन गया है, उनकी जीवनशैली में तैयार माल-सामग्री एक अनिवार्य या अहम हिस्सा बनती चली जा रही हैं। हम जानते हुये भी अंजान बनते हैं, रेडिमेंट द्रुतगति की जीवनचर्या में जंकफूड और ऐसी कई खाद्य सामग्री जैसे चीजे की मांग बाजारों में आसानी से उपलब्ध की जाती हैं, वह सारी चीजे भरोसे मंद नहीं होती हैं।

डॉ. बी. एल. पवार

1Page

मिलावटी पदार्थों में जहां जहर (विषैला) जैसा पदार्थ भी शुद्ध मिलना मुश्किल हो, वहाँ बाकी चीजों की बात करना समय की बरबादी है । समाजों की कुछ समस्याओं का निबटारा करना तपश्चर्या की साधना के समान है । वर्तमान में यह समस्या का जोर सभी समाजों और वर्गों में दिखाई देता है, भूखमरी वर्ग तो पहले से ही गरीबी जैसी समस्याओं से पीड़ित रहा है ।

संसार में सभी मानव और मानवोत्तर समाजों में यह बुनियादी प्रश्न है कि अपने अस्तित्व के लिए शुद्ध हवा, जल, भोजन और आवास-निवास आदि आवश्यकताओं की पूर्ति में अपना सारा मूल्यवान और किंमती जीवन खर्च कर देते हैं । अभ्यास के मापदंड और वैज्ञानिक आधार स्वरूप प्रत्येक मनुष्य जीवन के लिए कम से कम प्रतिदिन २३०० से २४०० जितनी केलरी शक्ति वाले पोषण क्षम आहार की आवश्यकता रहती है । वह मानव समुदाय के सभी लोग समान स्वरूप में पाने के लिए सक्षम नहीं होते । शहर समुदायों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में माताएँ -बच्चे शुरू से ही कुपोषण समस्या से जूझ रहे थे, पर आज इन समस्या की जड़े सभी समाजों-वर्गों में विशाल फ़लक पर उभरती जा रही हैं । इन विषय परिप्रेक्ष्य में गुजरात के विभिन्न जिल्लों में इस समस्या की स्थिति क्या है, इसका पता लगाने का प्रयास किया गया है, जो निम्नांकित है ।

क्रम	जिल्ले	संख्या
१	बड़ौदा	६५,०४७
२	सुरत	५४,६९६
३	पंचमहाल *	४६,५९४
४	अहमदाबाद	४६,३६०
५	बनासकांठा *	४४,९९५
६	दाहोद *	३५,२७६
७	साबरकांठा *	३५,०७५
८	भावनगर	३३,१८१
९	सुरेन्द्रनगर	३१,०१४
१०	खेड़ा	३०,००१
११	राजकोट	२५,०१९
१२	आनंद	२१,२३५
१३	बलसार *	२०,७९३
१४	पाटन	२०,४९५
१५	भरुच *	२०,०३८

डॉ. बी. एल. पवार

2Page

१६	जामनगर	१८,९५४
१७	कच्छ	१६,११९
१८	महेसाणा	१४,२४५
१९	गांधीनगर	१३,४८२
२०	नर्मदा *	१२,७३७
२१	तापी *	१२,५२६
२२	अमरेली	११,८७७
२३	डांग *	११,६५०
२४	जूनागढ़	९,७७५
२५	नवसारी	५,७७०
२६	पोरबंदर	१,२०७
कुल	गुजरात	६,५८,१६१

उपर्युक्त सारणी से ज्ञात होता है कि गुजरात राज्य में सबसे ज्यादा कुपोषित बच्चे बड़ौदा जिल्ले में ६५०४७ सबसे पहले स्थान पर है। दूसरा स्थान सुरत, तीसरा स्थान पंचमहाल और चौथे स्थान पर अहमदाबाद है, बाकी जिल्लों को हम क्रम में ज्ञात कर सकते हैं। गुजरात प्रदेश की आबादी को ध्यान में रखकर शायद ६.५८ फीसदी बच्चे इस समस्या से ग्रस्त हो चुके हैं।

अभ्यास क्षेत्र को ध्यान में रखकर आदिवासी समाजों में वर्तमान में कुपोषण समस्या के अवलोकित कारणों का पता लगाने का निम्नांकित प्रयास किया है।

(३) कुपोषण समस्या के कारण :

(१) गरीबी व अज्ञानता :

आदिवासी समाजों के लिए यह प्रश्न कोई नया-पुराना, या आयात-निकास का नहीं हैं। यह सिलसिला तो पीढ़ियों से इन समाजों में चलता रहा है। प्रचंड गरीबी क्या है? कैसी है? क्यों है? इसका निपटारा कैसे करे जैसे कई सवाल उठते रहे हैं। हकीकत में हम आज तक इनकी जड़े तक पहुँचने में विफल रहे हैं। कभी गरीबी व अज्ञानता को दूर करने की संज्ञाएँ तो आसानी से दी जाती हैं। लेकिन ठोस कदम ले नहीं सके। आदिवासी लोग गरीबी में जन्म लेते हैं, सारा जीवन गरीबी में झुझकर अपना जीवन दायित्व संभालते हैं, और अंत में गरीबी में ही अपना दम तोड़ देते हैं, यह

अंतिम सत्य है। कठिनाई से दो वक्त के भोजन का इंतजाम तो कर लेते हैं पर यह सिर्फ पेट भरने के मतलब से होता है। उसमें विटामिन, प्रोटीन या कैल्शियम से कोई मतलब नहीं होता। आर्थिक परिस्थिति कमजोर होनेके कारण वे गुणवत्तासभर- शरीर शक्ति के लिए अच्छा आहार-पोषण का इंतजाम करने में सदैव नाकामयाब रहते हैं। संजोगाधिन कभी नजदीकी बाज़ारों में जाते हैं तो कम मात्रा में फल-फलादी लाकर परिवार के सदस्य मिल जुलकर बाँटकर खाते हैं। इन परिस्थितियों से अंदाजा लगाया जाए तो एक दिन अच्छा भोजन मिलने पर -या दूध, फल-फलादी खा लेने से सालभर का हल नहीं निकाला जाता। पोषणक्षम आहार की तंगी के कारण माताओं की सेहत अत्यंत दयनीय होती है, सगर्भावस्था में वे विटामिन, प्रोटीनयुक्त आहारों के अभाव के कारण कमभागी जन्मे हुये बच्चों की सेहत में भी निरसता पाई जाती है। गरीबी के कारण आदिवासी परिवारों में स्त्री-पुरुष सभी को आजीविका प्राप्त करने के लिए मजदूरी का सहारा लेना पड़ता है ताकि वह कुछ हद तक परिवार का गुजारा कर सके, इन परिस्थितियों में इनके पास कुछ मुनाफ़ा नहीं होता।

बेशक आधुनिक शिक्षा की लहर आदिवासी समाजों तक पहुँच चुकी है। बल्कि आर्थिक स्थिति कमजोर और महंगी शिक्षा होने के कारण इन लहर में सभी आदिवासी समान मात्रा में शामिल नहीं हो पाते। जैसे भील परिवारों में बच्चों से लेकर स्त्री-पुरुष, बुजुर्ग सभी आयु वर्ग में शिक्षा की मात्रा में निरसता पाई जाती है। खास तो बच्चों को जिस अवस्था में खेल-कूद, शिक्षा के लिए पहल करनी चाहिए इन आयु में इन्हे घर संभालने की जिम्मेदारी, ढोर चराने, मजदूरी में सहभागी बनना आदि प्रवृत्तियों के लिए महत्व दिया जाता है।

(२) बेरोजगारी एवं बढ़ती आबादी :

आदिवासी समाजों में बेरोजगारी का प्रश्न गंभीर स्वरूप में पाया जाता है। अन्य समाजों तरह खेती इनका प्रमुख व्यवसाय है। साथ में पशुपालन, खेती मजदूरी आदि पूरक व्यवसाय के आधार पर परिवारों का पालन-पोषण करते हैं। विषम भौगोलिक स्थानीय परिस्थितियों के कारण यहाँ के आदिवासी प्रारब्धवादी है। रवि फसल सिर्फ बारिस के मौसम के अधिन होने के कारण वह सफल या विफल भी हो सकती है। अन्य मौसमों की रवि फसल का प्रावधान न होने के कारण स्थानीय मजदूरी का प्रश्न विकट बनता है। सदैव उन्हें मजदूरी नहीं मिल पाती इन समस्याओं के हल स्वरूप ये लोग मानसून खुलते ही नजदीकी शहरों और इनके तहसील क्षेत्रों में सालभर परिवारों के साथ नसीब अजमा ने के लिए भटकते रहते हैं। दिन भर के परिश्रम से जो भी मजदूरी मिलती है उसी में से मोटा अनाज, जरूरी चीजें खरीदकर पेट पाल रहे हैं। प्रसंगोपात हरी सब्जियों का कभी-कभी



इंतजाम कर सकते हैं, बाकी रोटी -चटणी से काम चला लेते हैं । इन परिस्थितियों में वह विटामिन, प्रोटीन या केलरी युक्त आहार, दूध, घी, अंडा, फल-फलादी की आशा -उमीदे कैसे करेंगे, यह उनके जीवन की हकीकत है ।

दूसरी और आदिवासी समाजों में बढ़ती हुई आबादी एक चिंता का विषय है । जैसे डांग जिल्ले में पिछले दशक में करीब ४० हजार से ज्यादा मानव आबादी की बढ़ोतरी हुई है । जिस गति से आबादी बढ़ती जाती है इस गति से रोजगारी में तेजी नहीं आ रही, घने जंगल, पहाड़ी इलाका, पियत संबंधी फसलों के अभावों के कारण स्थानीय आबादी के पालन-पोषण के लिए यह प्रश्न बहुत गहरा बनता जाता है । परिवारों में सभ्य संख्या विशाल होने के कारण उनकी खाधान्न जरूरतों से लेकर प्रत्येक कठिनाइयों का सामना करने की नौबत आती है । अनावश्यक अधिक प्रवृत्तियाँ करने पर भी उन्हें नीरसता मिलती है । संक्षेप में वह अपनी मुश्किलों के कारण बच्चों व परिवार की परवरिश में खास ध्यान नहीं दे पाते ।

(3) खाध सामग्री में मिलावट :

आज यह प्रश्न चारों ओर बुलंद बनता जा रहा है । पहले कम आबादी, आधुनिक उपकरणों की कमी, ज्ञान का अभाव, सादा जीवन, रवि फसलों में दवाएं, रासा खाध आदि का कम उपयोग, बाजारू जीज-वस्तुओं में कम मिलावट होती थी । लेकिन आज बदलते समय के साथ भागदौड़ वाले जीवन में ये सभी मापदंड भूला दिए गये हैं । बाजारों में उपलब्ध की जानेवाली हर कोई चीजे शुद्ध मिलना असंभव प्रतीत होता है । दूध, घी, फल-फलादी, हरी सब्जियाँ, जंकफूड, दवाइयाँ, खाध चीजें यहाँ तक कि आज बाजारों में शुद्ध झहर मिलना भी मुश्किल बन गया है, तो बाकी चीजें की कल्पना करना बेकार है । वर्तमान में मनुष्य का जीवन विषैलासा बनता जा रहा है । मनुष्य -मनुष्य की परवाह न करते हर ज्यादा मुनाफा कमाने की दौड़ में हैं । वह मनुष्य जीवन और जन्म के लिए घातक है । ज्यादा से ज्यादा रुपया-पैसा कमाने की लालच में इन्सानियत खो बैठे हैं । गरीबों के पास तो यह चीजें खरीदने के लिए रुपया -पैसा का इंतजाम है नहीं, बल्कि आज मध्यम से धनी और ज्ञानी परिवारों में रेडिमेन्ट जीवन का मोहपाश स्पर्धा में परिवर्तित होता जा रहा है । ये लोग ज्यादातर जंकफूड, तैली, चरबीवाले खाधान वस्तुओं को प्रधानता दे रहे हैं, बल्कि ये बाजारू चीजें कितनी भरोसे मंद हैं और कालक्रम में सेहत के लिए क्या मुश्किले होंगी इनकी कभी परवाह नहीं करते । इन सभी समस्याओं से ग्रस्त आज अनेकानेक असाध्य रोगों के भोग बनते चले जा रहे हैं ।

(४) सरकारी प्रयास :

कुपोषण समस्या के रोकथाम की लिए सरकार की ओर से कुछ योजनाएँ जारी की गई हैं, और वह सराहनीय प्रयासों में टेक होम राशन, निर्देश भोजन के रूप में राब -सुखड़ी, अन्न प्राशन दिन, सप्ताह में दो दिन फल, तीसरे भोजन में लड्डु, आदिवासी क्षेत्रों में सप्ताह में दो दिन दूध आदि योजनाएँ अमल में लाई गई है । जरूरत मंद परिवारों के बच्चों के लिए यह प्रयास तत्काल सहायक बन रहा है । लेकिन सप्ताह में एक दिन भोजन, दूध, फल-फलादी मिलने से इस समस्या का हल नहीं आ जाता । मनुष्य को प्रतिदिन १०० mg १५० mg कमसेकम कैल्शियम शक्ति की आवश्यकता रहती है । यह प्रयास बाल मंदिरों, प्राथमिक स्कूलों में जन्म के बाद किया जा रहा है, लेकिन जहाँ तक सवाल है की सगर्भावस्था से जो माताएँ गुजर रही है वह इन पोषणक्षम आहार से वंचित है, क्योंकि हम जानते है कि इन अवस्था में शिशु (बालक) अपनी माँ से आहार प्राप्त करता है । जो माँ खुद पोषण युक्त भोजन से वंचित हो वहाँ स्वस्थ बालक जन्म की ऊमीदे निरर्थक है । आर्थिक कमजोरी के कारण वह इन सारी चीजों का इंताजम नहीं कर पाते, जिसके कारण बालक जन्म से ही कुपोषण के शिकार बन जाते है । वर्तमान स्थिति में गुजरात राज्य में करीब ३४ % फीसदी बच्चे कुपोषण के शिकार बताये जा रहे हैं, तो दूसरी और NGO 'वादा न तोड़ अभियान' ने खुलासा दिया है कि, समन्वित बाल विकास योजना के विश्लेषण में राज्य में ३४.०५ फीसदी बच्चे कुपोषण की विविध श्रेणी में आ रहे है ।

संक्षेप में विश्व स्तर पर उभरनेवाली समस्याओं में से कुपोषण समस्या सभी समाजों में प्रमुख बन गई है । पहले हम अकालग्रस्त अन्न की कमी के कारण इस समस्या को जवाबदेह मानते थे, लेकिन आज इस समस्या की जड़ें सभी समाजों में गहराई तक पहुँच चुकी हैं । प्रत्येक समाज चाहे वह आदिवासी हो या,गाँव-शहर, हर चौराह तक मार्गदर्शन (जागरूकता) के लिए अभियान चलाना चाहिए । सरकार द्वारा खाद्य बिक्री चीज-वस्तुओं में हो रही मिलावट की रोकथाम के लिए ठोस कदम उठाना चाहिए, ताकि वह मानव आरोग्य के साथ छेड़खानी न कर सके । आदिवासी क्षेत्रों में रोजगारी का प्रावधान करने की सख्त जरूरत दिखाई देती है । जिसे वह नजदीकी में रोजगारी पाकर अपने परिवार का अच्छी तरह से पालन-पोषण और बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी आदि प्रश्न का हल निकाल सके । अंत में समस्याएँ कोई नई -पुरानी, आयात-निकास या अपने-आप निर्मित नहीं होती इन समस्याओं का निर्माता व्यक्ति या समाज खुद होता है ।



संदर्भसूचि :

- डॉ. पटेल.जयंति : गुजरात में कुपोषण एवं पडकारें, अहमदाबाद
- दवे हर्षिदा : आदिवासी महिलाएं और विकास, यूनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड,अहमदाबाद पहली आवृत्ति -१९९९
- पटेल क्रिश्ना : पोषण-कुपोषण एवं समतोल आहार, श्री पुस्तक मंदिर
- डॉ.मेवाड़ा एल.एस : जनजातिय महिलाओं भोजन, पोषण एवं स्वास्थ्य, रिलायबल पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद.
- गुजरात समाचारपत्र १० मार्च -२०१५ pp -१६
- दीपक : कुपोषित और मिलावटी भोजन की समस्या-हिन्दी लेख, भारतदीप, ग्वालियर, <http://zeedipak.blogspot.com>